हिंदी गजलों में आम आदमी की पीड़ा की अभिव्यक्ति

डॉ. अनिल शर्मा
रूड़की

साहित्यिक आलोचकों और काव्य–समीक्षकों ने गजल में सामाजिक संदर्भों को खोजने या गजल के अशर को आम जीवन से जोड़ने का जिस पक्षधरता के साथ समर्थन किया है और इस गुण को गजल का सबसे बड़ा गुण माना है, उसने गजल को उसकी विषय–सामग्री के दृष्टिकोण से काफी कुछ परिवर्तित किया। गजल को सामाजिक संदर्भों से जोड़ने का यह पहलू सकारात्मक रहा है और उसी के कारण गजल को प्रेम, वियोग, व्यक्तिगत पीड़ा, मिलन और जुदाई जैसे सीमित दायरे वाले विषयों से बाहर निकालकर मानव–जीवन के व्यापक धरातल पर उतारा जा सका है।

वास्तव में आज आम आदमी की जिंदगी अत्यधिक कष्टमय हो गई है। इसमें सुख एवं शांति अब स्वप्न के समान हो गए हैं। आज जिंदगी मखमली वस्त्र नहीं है बल्कि कठिनाइयां, पीड़ा, संत्रास और चुभन का दूसरा नाम ही जिंदगी है। कभी शराब और शबाब में डूबी रहने वाली गजल आज आम आदमी की भावनाओं और पीड़ा को भी समझने लगी है।

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल ने आम आदमी की पीड़ा और उसके भीतर पलने वाले कोलाहल को अपनी गजलों में बहुत बारीकी सी उकेरा है। वे लिखते हैं –

जिंदगी में दोस्तों बस दर्द ही काफी नहीं,
दर्द के आधार का एहसास होना चाहिए।

वास्तव में डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल जी को केवल दर्द की ही नहीं वरन् दर्द के आधार की भी गहन अनुभूति है यही कारण है कि उन्होंने साधारण मनुष्य की पीड़ा को समझा है और अपनी गजलों के माध्यम से उन्हें अभिव्यक्ति दी है।

हिंदी गजलकारों की इसी अनुभूति के बारे में गजल के उस्ताद जनाब निस्तर खानकाही जी कहते हैं:

''उनकी यात्रा, आदमी के बाहर नहीं उसकी अंतरात्मा के अंदर कोने में छिपे उन काले धब्बों की तरफ है, जो बाहर के कृत्रिम प्रकाश के प्रहार से बचकर भीतर जा छिपे हैं और जिनका पता उस व्यक्ति को भी नहीं है, जिसके भीतरी कोण इन काले धब्बों को छिपाए हुए हैं। इस तलाश में जो कुछ और जैसा कुछ हिंदी गजलकारों के सामने आता है, वे उसे शेर के रूप में ढालते हैं और इस प्रकार आज का आदमी और परिस्थितियों में बंधा उसका जीवन अपने विभिन्न अनबूझे पहलुओं के साथ हमारे सामने आता है।''

हिंदी के गजलकारों ने गजल का परिचय आम आदमी के दुःख–दर्द से कराया। हिंदी गजलों में मनुष्यों के दुखों, अभावों और उसकी पीड़ा को जिस प्रकार व्यापक अभिव्यक्ति मिली है, उससे प्रेरित होकर डॉ० रोहिताश्व अस्थाना कहते हैं:

दर्द का इतिहास है हिंदी–गजल,
एक शाश्वत प्यास है हिंदी–गजल।

प्रेम मदिरा रूप की बातों–भरी,
अब कहां उपहास है हिंदी–गजल।

आदमी के साथ नंगे पाँव ही,
ढो रही संत्रास है हिंदी–गजल।

आदमी की जिंदगी का आईना,
आईने की प्यास है हिंदी–गजल।

आज का हिंदी गजलकार यथार्थ के धरातल पर युग की पीड़ा को भोगकर गजल कहता है। साठोत्तरी हिंदी–गजल के प्रसिद्ध गजलकार चंद्रसेन विराट का कथन दृष्टव्य है:

हम निचोड़ते हैं आत्मा का लहू,
तब कहीं जा के गजल होती है।

जीवन पेट की भूख से जुड़ा है, क्योंकि जीवित रहने के लिए व्यक्ति को रोटी चाहिए। आज का व्यक्ति दिन–रात रोटी जुटाने में व्यस्त है। वह इसके अभाव में इतना पीड़ित है कि प्राकृतिक उपादानों में भी उसे रोटी ही नजर आती है। चंद्रसेन विराट का एक शेर दृष्टव्य है:

चाँद को देखा तो रोटी की याद जग उठी,
पेट की भूख से राहत मिले तो प्यार करूं।

डॉ० कुंअर बेचैन ने पेट को मदारी बताया है, जो दिन–रात हमें नचाता रहता है:

यह हमको नचाता है इशारों में रात–दिन,
यारों हमारा पेट मदारी की तरह है।

आर्थिक विषमताजन्य निर्धनता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। कितने ही लोगों को तन ढकने के लिए वस्त्र नहीं मिलता। व्यक्ति जी–तोड़ मेहनत करता है फिर भी अपने बच्चे के मन बहलाने को एक खिलौना भी नहीं जुटा पाता गजलकार ओंकार गुलशन का सामाजिक व्यवस्था पर करारा व्यंग्य देखिए:

कितने जिस्मों पे नहीं आज भी कपड़ा कोई,
इस समस्या पे तो आयोग न बैठा कोई।

चोर बनता नहीं बच्चा तो भला क्या बनता,
जब खिलौना नहीं बाजार में सस्ता कोई।

भौतिकवाद की अतिशयता के कारण आज आत्मीयता समाप्त प्रायः होती जा रही है। आदमी अब आदमी से निरंतर दूर होता जा रहा है। जीवन में आत्मीयताजनित प्रेमानुभूति नाम की कोई वस्तु शेष ही नहीं रह गई है। हिंदी के विद्वान एवं गजलकार डॉ० योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण' ने आम आदमी की जिन्दगी का खाका इस प्रकार खींचा है:

खत्म होती जा रही है जिन्दगी,
आज खुद को खा रही है जिन्दगी।

हमने सोचा चैन से कट जाएगी,
पर कहर सा ढा रही है जिंदगी।

होठ ही मुस्कान के दुश्मन हुए,
दर्द बनती जा रही है जिंदगी।

आज की स्थिति यह है कि एक पड़ौसी को दूसरे पड़ौसी का नाम तक नहीं पता है। सभी अपने में सिमटे जा रहे हैं। डॉ० गिरिराज शरण अग्रवाल जी का यह सुंदर शेर देखिए:

हुए अपने–अपने में सीमित सभी,
वे रिश्ते कहां, सिलसिले अब कहां।

प्रत्येक पीड़ित आदमी अपने आपको परिस्थितियों के हाथों इतना विवश अनुभव करता है कि विवशता के सारे बंधन तोड़ने के लिए छटपटा उठता है। डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल के शब्दों में इस छटपटाहट में उसके हृदय से यही पुकार निकलती है:

इन चिरागों में रोशनी बो दो,
टूटते तन में जिंदगी बो दो।

खेत खाली पड़े हुए हैं यार
आदमीयत में आदमी बो दो।

प्राकृतिक जीवन से कटकर और औद्योगिक नगरों की भीड़ में गुम होकर आदमी कितना सीमित, कितना बौना और कितना अधूरा हो गया है कि उसका समूचा संसार, स्वयं उसके कमरे की छत तक सिमटकर रह गया है। डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल का निम्न शेर हमें यही अनुभव कराता है:

सिमटा तो आज अपने ही कमरे की छत बना,
कल तक तो आसमान–सा फैला हुआ था मैं।

यंत्रवत व्यस्त नगरीय जीवन के प्रभाव के कारण मानव–हृदय की कोमल अनुभूतियां निरंतर अस्तित्वहीन एवं क्षीण होती जा रही हैं। प्रसिद्ध गजलकार जहीर कुरैशी लिखते हैं:

रिश्तों के आइने जहां टूटे हैं बार–बार,
उन स्वार्थों की बेरहम चट्टान है शहर।

जिसमें कभी भी प्यार की खुशबू नहीं मिली,
इक वेश्या के अधरों की मुस्कान है शहर।

जीता है जिसमें आदमी मुर्दों की जिंदगी,
कुछ लाख जिंदा लाशों का शमशान है शहर।

भारतीय संस्कृति का ''वसुधैव कुटुंबकम'' का आदर्श आज बिल्कुल निरर्थक सा हो गया है। आदमी केवल अपने स्वार्थ में सिमट कर रह गया है। आज के व्यक्ति की इसी मानसिकता को माणिक वर्मा ने प्रस्तुत शेर में अभिव्यक्त किया है:

आप अपनी सरहदों में सो गया है आदमी,
चीन की दीवार जैसा हो गया है आदमी।

आज का आदमी संवेदनाशून्य हो गया है। परस्पर सहयोग और विश्वास की जगह शंका और अविश्वास का वातावरण बन रहा है। अपनत्व का भाव हृदय में न होकर केवल दिखावे के लिए शेष बचा है। समाज की इस स्थिति का चित्रण डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल ने अत्यंत सरल शब्दों में किया है:

कैसे–कैसे लोग यहाँ,
गूंगे–बहरे लोग यहाँ।

अपने मन की बात नहीं,
मन से कहते लोग यहाँ।

दिल–दिल में सूनापन है,
खोए–खोए लोग यहाँ।

छिपकर मन की बात कहें,
सारे अपने लोग यहाँ।

जीवन में शोषण एवं अत्याचार के कड़वे अनुभवों ने सीधी–सादी और भोली–भाली नारी को ज्वालामुखी में परिवर्तित कर दिया है। डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल जी के शब्दों में:

मेरे अंदर खौलता लावा पिघलती आग है,
फूल खिलते थे मेरे मन में, कभी ऐसा भी था।

समाज से खिन्न नारी का दर्द डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल की गजल के निम्न दो शेरों में देखिए:

कौन मुझको मेरा पता देगा,
कौन अब मुझको रास्ता देगा।

दर्द, बेचौनियां, घुटन, आंसू,
ये जहां मुझको और क्या देगा।

आज के भ्रष्ट वातावरण में ज्ञान, प्रतिभा, योग्यता एवं क्षमता का कोई मूल्य नहीं रह गया है, जबकि भाई भतीजावाद और रिश्वतखोरी के बल पर अयोग्य एवं अक्षम व्यक्ति उच्च पदों पर विराजमान हो जाते हैं। निम्न शेरों में प्रतीकों के माध्यम से डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल ने यही इशारा किया है:

धुंध का वातावरण है इन दिनों,
कैद कुहरे में किरण है इन दिनों।

कुर्सियों पर है सिफारिश मूढ़तम,
और प्रतिभा को ग्रहण है इन दिनों।

सामाजिक मान्यताएं तेजी से बदल रही हैं। मित्रता स्वार्थ और धोखे पर आधारित हो गई है। डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल जी का निम्न शेर देखिए–

जो मुझको छल रहा है मेरा यार ही तो है,
यह मित्रता भी शहर में व्यापार ही तो है।

साधनों एवं विकास के अवसरों से वंचित तथा उच्चवर्ग के द्वारा शोषित–पीड़ित आदमी के घर का कारुणिक चित्र प्रस्तुत करते हुए डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल लिखते हैं:

दिन–रात बरसती रहती है, सूखे में भी छत घर की,
अब किस–किस को बतलाऊं मैं, कैसी है हालत घर की।

भूख यहां सपने बुनती है, सर्दी लोरी गाती है,
इच्छाएं होली–सी जलतीं हालत यह औसत घर की।

डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल ने पीड़ित आदमी की विवशताओं को बहुत सुंदर अंदाज में समाज के सामने उजागर किया है। कुछ शेर उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत हैं:

प्यास होठों पर लिए जीता रहा,
मैं समुंदर था, मगर वीरान था।

'हम सैलानी घूम रहे थे अच्छी दुनिया पाने को,
जितने रस्ते हमने देखे, सब ही उलझे–उलझे थे।

उक्त दोनों शेर वर्तमान युग के व्यक्ति की किसी न किसी विवशता को दर्शाने का सुंदरतम प्रयास है। पहला शेर व्यक्ति की उस पिपासा को दिखाता है, जो सागर जैसा विशाल होते हुए भी वर्तमान युग में अपनी प्यास नहीं बुझा पा रहा है। दूसरे शेर में व्यक्ति की इस मजबूरी का वर्णन है, जिसमें सारे संसार को अपना कहने वाला व्यक्ति किसी एक भी प्रियजन में

अपनत्व का भाव नहीं देख पा रहा है।

प्रसिद्ध हिंदी गजलकार दुष्यंत कुमार ने भी समाज के पिछड़े और निर्धन वर्ग के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा है:

ये सारा जिस्म झुककर बोझ से दुहरा हुआ होगा,
मैं सजदे में नहीं था, आपको धोखा हुआ होगा।

यहाँ तक आते–आते सूख जाती हैं कई नदियां,
मुझे मालूम है, पानी कहां, ठहरा हुआ होगा।

कई फाके बिताकर मर गया जो, उसके बारे में,
वो सब कहते हैं अब, ऐसा नहीं, ऐसा हुआ होगा।

उपर्युक्त शेरों से स्पष्ट है कि आर्थिक लाभ की नदियां निर्धन एवं पीड़ित वर्ग तक आते–आते पता नहीं कहां ठहरकर सूख जाती हैं और उन्हें कौन बीच में ही रोक लेता है? दुष्यंत जी का स्पष्ट संकेत है कि अर्थतंत्र पर प्रभुत्व जमाने वाली शक्तियां पीड़ितों और वंचितों तक उनकी मेहनत का लाभ पहुंचने ही नहीं देती हैं।

डॉ० अजय जनमेजय ने गरीब के घर में बैठी भूख का ऐसा वर्णन किया है, जो सहज ही मानव की संवेदनाओं को झकझोर देता है:

भूख लगी, बच्चा रोया, तुम कुछ भी पीने को दे दो,
दूध नहीं था पहले भी, क्या घर का सूख गया पानी।

आज समाज में इंसानियत नाम की कहीं कोई वस्तु नहीं रह गई है। इस विषय में कवि श्री बालस्वरूप 'राही' लिखते हैं–

हथकड़ी लेके किसे ढूंढ़ रहे हैं सब लोग,
क्या शहर में कोई इंसान अभी बाकी है।

आज आदमी, आदमी से दूर जा रहा है। अजनबीपन बढ़ता जा रहा है। यह स्थिति अत्यंत पीड़ादायक है। पीड़ित एवं शोषित व्यक्ति किसी के भी विरुद्ध अपनी जुबान खोलने की हिम्मत नहीं कर पाता, लेकिन शून्य में टकटकी लगाए उसकी आँखें सबकुछ बयान कर देती हैं।

समाज का स्वरूप विकृत होता जा रहा है। सामाजिक मान्यताएं तीव्रता से परिवर्तित हो रही हैं। चारों ओर भ्रष्टाचार व्याप्त है। समाज का वातावरण इतना बदल गया है कि प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे पर मुखौटा–सा लगा हुआ दिखाई देता है।

उपर्युक्त अध्ययन के बाद यह कहा जा सकता है कि हिंदी–गजलकारों ने एक लंबी अवधि तक व्यक्ति एवं व्यक्तिगत परिस्थितियों का अपनी पारखी दृष्टि से गहरा विश्लेषण किया है। तत्पश्चात इन गजलकारों ने आम आदमी की पीड़ा को अपनी गजलों में सफलतापूर्वक अभिव्यक्ति दी है।

हिंदी में अखिल भारतीय भाषा बनने को क्षमता है।

–राजा राममोहन राय